

# उ.प्र. शिक्षक पात्रता परीक्षा

उच्च प्राथमिक स्तर 1/2dyk 0x1/2  
भाग-3

सामाजिक अध्ययन



इतिहास

1. सिंधु घाटी की सभ्यता	1
2. वैदिक सभ्यता	6
3. जैन धर्म	12
4. बौद्ध धर्म	13
5. वैष्णव धर्म	14
6. शैव धर्म	14
7. ईसाई धर्म	14
8. मुस्लिम धर्म	15
9. मगध राज्य का उदय	15
10. मौर्य साम्राज्य	17
11. मौर्यतर काल	19
12. गुप्त काल	20
13. गुप्तोत्तर काल	21
14. मध्यकालीन भारत	22
15. मुगल वंश	26
16. 1857 का विद्रोह	30
17. सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन	31

## भूगोल

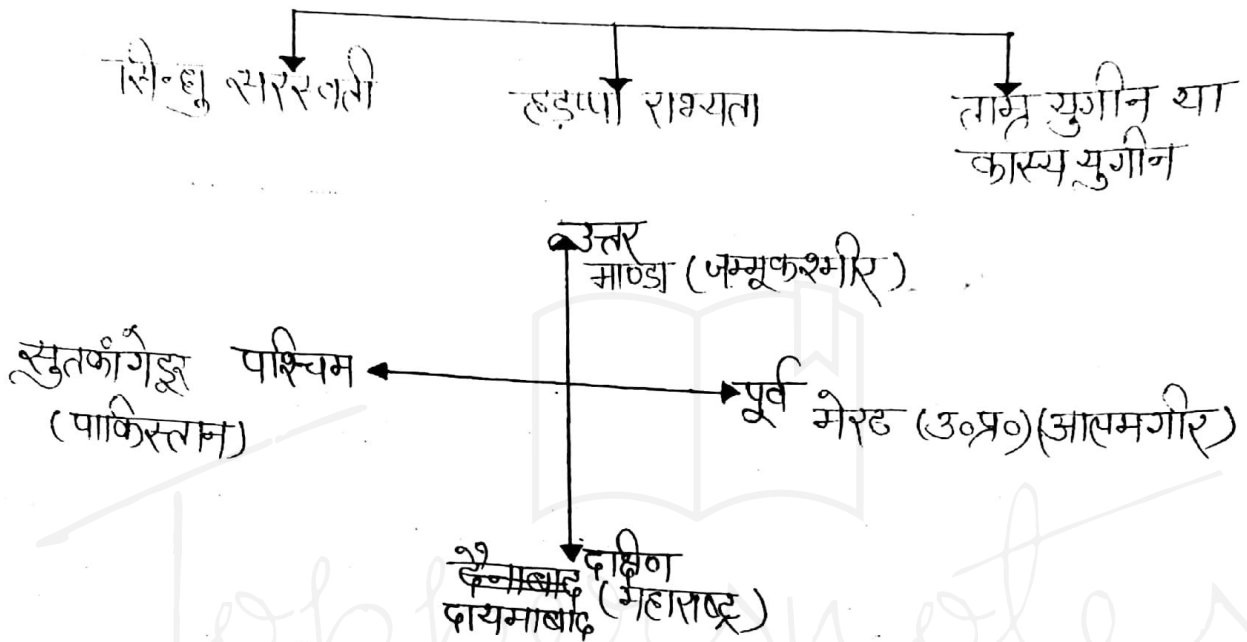
1. परिचय (ब्रह्मांड)	45
2. देशांतर रेखाएँ	54
3. स्थल मण्डल	55
4. भूकम्प	56
5. ज्वालामुखी	58
6. पर्वत	59
7. पठार	62
8. मैदान	63
9. मरुस्थल	64
10. झील	66
11. मिट्टियाँ	69
12. वायुमण्डल	71
13. जलमण्डल	72
14. एशिया महाद्वीप	75
15. अफ्रीका महाद्वीप	76
16. उत्तरी अमेरिका	77
17. यूरोप	79
18. ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप	80
19. अण्टार्कटिका महाद्वीप	82
20. फसले	86



# सिन्धु घाटी सभ्यता

[ 2350 ई०पू० - 1750 ई०पू० ]

## सिन्धु घाटी सभ्यता



- \* सन् 1921 ई० में महानिदेशक जॉन मार्शल के नेतृत्व में हयाराम सहानी ने हड़प्पा की खोज की।
- \* सन् 1922 ई० में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो की खोज की। (मोहन जोदड़ो सबसे बड़ी सभ्यता में एक मानी गई)
- \* मोहनजोदड़ो को मृत्तक का टीला कहा जाता है।
- \* हड़प्पा सभ्यता वर्तमान में तीन देशों में साक्ष प्रकट करती है।
  - ↓ पाकिस्तान      ↓ अफगानिस्तान      ↓ भारत
- \* सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल
  - ↓ हड़प्पा ⇒ सिन्धु सभ्यता में यह स्थल पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में माण्ड गौमरी जिले में रावी नदी बाँये तट पर स्थित है।

- \* इसकी खोज सन् 1921 ई० में जॉन मार्शल के नेतृत्व में दयाराम सहाय ने की थी।
- \* हड़प्पा 5 K.M के इर्द गिर्द फैला हुआ था।
- \* इस स्थल पर दक्षिण दिशा से समाधीयाँ प्राप्त हुई। जिसे R-37 नाम दिया गया था।
- \* हड़प्पा के ~~स्वास्तिक~~ चिन्ह का उल्लेख मिलता है।
- मोहनजोदड़ो ⇒ \* यह सिन्धु प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दायें तट पर इस स्थल की खोज की है।
- \* मोहन जोदड़ो को प्रैलो या मृतको का टीला कहा जाता है।
- \* इसे सिन्धु का बाग भी कहा जाता है।
- \* इस स्थल से विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ है जिसकी :-  
 लम्बाई ⇒ 11.88 मी० चौ० ⇒ 7.01 मी० ऊँ० ⇒ 2.43 मी०
- \* मोहन जोदड़ो से एक विशाल अन्नागार प्राप्त हुआ जो सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।
- \* इसकी लम्बाई 45.71 मी० और चौड़ाई 15.23 मी० थी।
- \* हड़प्पा और मोहनजोदड़ो एक दूसरे से 483.Km दूर स्थित सिन्धु नदी से जुड़े हुये थे।
- \* पिगट ने मोहन जोदड़ो और हड़प्पा को जुड़वाँ राजधानी कहा था।

- चन्द्रदड़ो ⇒ \* सन् 1931 में एन. जी. मजूमदार ने इसकी खोज की थी।
- \* यहाँ पर झूकर और ज़ांकर संस्कृति विकसित हुई।
  - \* वैज्ञानिकों ने यहाँ मनुष्य बनाने का कारखाना खोजा।
  - \* चन्द्रदड़ो में उबेली का पीछा करते हुये कुत्ता के घन्टों का निशान ईलों पर मिले हैं।
  - \* यहाँ से लाली, काजल तथा अस्तरा प्राप्त हुआ है।
  - \* चन्द्रदड़ो से पाइपनुमा नालियाँ भी प्राप्त हुई हैं।

- लोथल ⇒ \* सन् 1954 में S.R Rao ने लोथल की खोज की।
- \* यह शहर अहमदाबाद में भोगवा नदी के तट पर स्थित था।
  - \* इस शहर से सती प्रथा के साक्ष्य मिले हैं।
  - \* लोथल से रंगई कुण्ड भी मिला था।

- \* काशीबंगा ⇒ इसकी खोज सन् 1951 में अमलानन्द घोष ने की थी।
- \* यहाँ से काली कँच की चूड़ियाँ और जुते हुये खेत मिले।
  - \* यहाँ युगल समाधान मिला है (पत्नी, पति)।

- रोपड़ ⇒ \* यह स्थान भारत में पंजाब प्रान्त में सतलज नदी के बाँये तट पर स्थित है।
- \* इसकी खोज 1953 से 1956 ई० में यशदत्त शर्मा ने की थी।
  - \* रोपड़ से मनुष्य के शव के साथ पालतू कुत्ते के दफनये जाने प्रमाण मिला है।
  - \* रोपड़ से ही चावल के श्रोत मिले हैं।



कोटदीजी ⇒ \* इसकी खोज सन् 1935 ई. में दुर्वे ने की थी।

\* कोटदीजी से पत्थर के औजार मिले हैं।

राखीगढ़ी ⇒ \* यह हरियाणा के घग्घर नदी पर स्थित है।

\* इसकी खोज 1969 में राख घान ने की थी।

\* यह सैन्धाव वासियों का सबसे बड़ा नगर था।

सुरकोटवा ⇒ \* इसकी खोज सन् 1964 में जे. पी. जोशी ने की थी।

\* यहाँ से छोड़े की आस्थियाँ मिली हैं।

\* यह गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है।

\* इस स्थान से हाड्डियों से भरा कलश मिला तथा अण्डाकार कब्र भी मिली हैं।

धौलावीरा ⇒ \* यह गुजरात के कच्छ जिले में खादिर नामक द्वीप में जिससे स्थानीय लोग 'बैठ' के नाम से जानते हैं।

\* इसकी खोज सन् 1966 से 1968 में जे. पी. जोशी ने की थी।

\* धौला का अर्थ सफेद होता है तथा वीरा का अर्थ कुँआ होता है।

\* अतः यह एक पुराना कुँआ है जिसका नाम धौलावीरा पड़ गया है।

वनवाली ⇒ \* यह हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है जो घग्घर नदी के तट पर स्थित है।

\* इसकी खोज सन् 1974 में आर. एस. विस्त ने की।

### सिन्धु सभ्यता में कृषि

\* इनके समय फावड़ा नहीं था। लेकिन हल रैखा का प्रमाण मिला है।



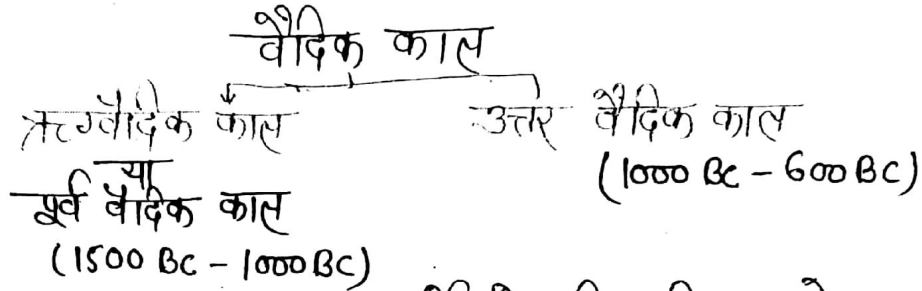
- \* सिन्धु सभ्यता के लोग सिंचाई नदियों और कुओं से किया करते थे
- \* जहाँ से नौ फसलों का अस्सेप मिला है। जिनमें गेहूँ और जौ प्रमुख फसलों में एक है।
- \* लोधल तथा रंगपुर से चावल के टुकड़े कम प्राप्त हुये हैं।
- \* लोधल से आरा पिसने के दो पद मिले हैं।
- \* इस सभ्यता की लिपि कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार भाव चित्रात्मक है।
- \* इस लिपि को ब्रैस्ट्रो फेदम कहते हैं जो पंक्ति में दाये से बायें तथा इसरी पंक्ति में बायें से दायें लिखित है।

### अन्य महत्वपूर्ण स्थल

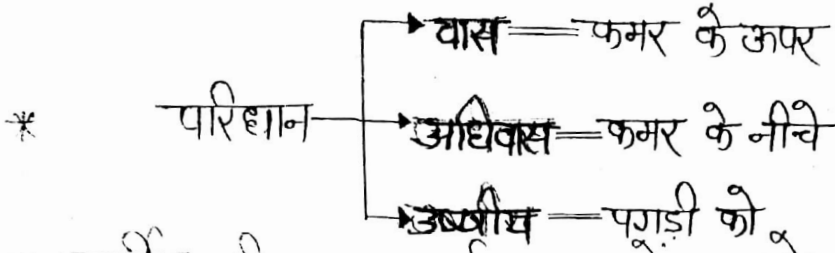
	स्थल	क्षेत्र
*	मैहरगढ़	बलूचिस्तान (पाकिस्तान)
*	डैरा इस्माइल खान	पंजाब (पाकिस्तान)
*	राखीगढ़ी	हरियाणा
*	माछा	जम्मू कश्मीर राज्य
*	रोजड़ी एवं प्रभासपाल	गुजरात

## वैदिक सभ्यता

वैदिक काल  $\Rightarrow$  1500 ई.पू - 600 ई.पू



- ऋग्वैदिक काल  $\Rightarrow$  \* ऋग्वैदिक आर्यों ने जिस विस्तृत क्षेत्र का निर्माण किया उसे सप्तसिन्धु प्रदेश कहा गया।
- \* इस क्षेत्र में प्रमुख सात नदियाँ प्रवाहित हैं। सिन्धु, सतलज, रावी, चिनाव, झेलम, व्यास, सरस्वती (पवित्र नदी)।
  - सामाजिक संरचना  $\Rightarrow$  \* ऋग्वैदिक सामाजिक संरचना का आधार परिवार या \* परिवार पितृसत्तात्मक था।
  - \* परिवार के मुखिया को "कुलप" कहा जाता था।
  - \* महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने तथा राजनैतिक संस्थाओं में शामिल होने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी।
  - \* ऋग्वैदिक काल में अपसा, घोषा, लोपमुद्रा, सिकता जैसे विदुषी महिला के ज्ञान का प्रमाण मिलता है।
  - \* ऋग्वैदिक काल में ऋग्वेद में पुरुष सूक्त को चार वर्गों में विभाजित किया  $\Rightarrow$  ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सूद्र की चर्चा मिलती है।
  - \* किन्तु यह विभाजन 'जन्ममूलक' ना होकर कर्म मूलक था।
  - \* ऋग्वेद के 9वें मण्डल में सोम का वर्णन है।
  - \* गायु को अधन्या (ना मारने योग्य) मना जाता था।
  - \* ऋग्वेदिक में संस्कारों को महत्व दिया जाता था।
  - \* पहले समय तक विवाह ना करने वाली महिला को अम्माजू कहते थे।
  - \* बाल-विवाह की प्रथा नहीं थी। समाज में सती प्रथा का कोई अस्तित्व नहीं था। विधवाओं को पुनर्विवाह की सुकृति थी।
  - \* ऋग्वैदिक आर्यों के मनोरंजन के साधन संगीत, नृत्य, धुड़कौड़, चौपड़ आदि रहे थे।



- \* आर्थिक जीवन ⇒ \* अर्थव्यवस्था में पशुओं का महत्व सर्वाधिक था।
- \* पशुपालन की तुलना में कृषि का महत्व नगण्य था।
- \* ऋग्वेद में उर्वरा ⇒ \* जुते हुये खेतों को कहा जाता था।
- \* श्वेत्य ⇒ पशुचारण योग्य (दागाह) को कहा जाता था।
- \* सीर ⇒ हल को।
- \* सृष्टि ⇒ हसिया को।
- \* करीष ⇒ गोबर की खाद्य।
- \* कुपो ⇒ कुँआ के लिए प्रयोग होता है।
- \* सीता ⇒ हल से बनी नासियों के लिये प्रयोग होता था।

### ऋग्वेदिक काल की नदियाँ

प्राचीन	आधुनिक
क्रमु	फुरम
कुंभा	काबुल
वितस्ता	इंडस
आस्किनी	चिनाब
परुष्णी	रावी
व्यातुहि	सतलुज
विपाशा	ब्यास
सदानीरा	गंडक
दृशद्रती	घग्घर
गोमती	गोमल
सुवस्तु	स्वात
सिन्धु	सिन्ध

- \* सत्य मेव जयते - मुडकोपनिषद से लिया गया है।
- \* तथा अस्तो मा सद्गमय ऋग्वेद से लिया गया है।
- \* गायत्री मंत्र ऋग्वेद में मिलता है।
- \* ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में इसकी रचना विश्वामित्र ने की।



## राजनैतिक

कुल (कुलप)  
 ग्राम (ग्रामणी)  
 विश (विशपति)  
 जन (जनपति या राजा)  
 जनपद

## संस्थाएँ

सभा  
 बड़े लोगों  
 के संस्था  
 समिति  
 आम जनता  
 का समूह

विद्वथ  
 आर्यों की  
 सबसे प्राचीन  
 संस्था

- \* इन्द्र, वरुण, सूर्य, आग्नि इत्यादि ऋग्वेदिक देवताओं में प्रमुख थे। जिनमें इन्द्र सर्वप्रमुख देवता थे। जिसे पुरन्दर कहा गया है।
- \* इसके बाद आग्नि एवं वरुण का स्थान है वरुण को तृत्वस्यगोत्र तथा आग्नि को जाति वैदस्थ कहा गया।

## उत्तर वैदिक काल

- \* आर्यों ने स्थायी जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया पशुपालन की जगह कृषि को अधिक महत्व मिलने लगा।
- \* उत्तर वैदिक आर्यों ने जिस विस्तृत क्षेत्र पर निवास किया उसे आर्यापट्ट की संज्ञा दी गई।
- \* सामाजिक संरचना ⇒ समाज में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट उत्तर वैदिक काल में दर्ज की गई। महिलाएँ अब अधिक स्वतन्त्र नहीं थीं उन्हें सभा की सदस्यता से वंचित किया गया।
- \* उत्तर वैदिक काल में पुरी के जन्म को अच्छा नहीं माना गया था।
- उत्तर वैदिक ग्रन्थ ⇒ इन्हें केवल तीन आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ हैं
- \* षाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों का वर्णन मिलता है।
- \* सबसे ज्यादा सबसे बड़ा लौहयुग अंतर्राज्यसेवा से मिला है।
- आर्थिक जीवन ⇒ लोगों ने खेती के व्यवसाय को अपनाया। क्योंकि लोहे के प्रसार ने खेती को सुलभ बना दिया।
- \* निष्क, सतमान जैसे सिक्कों की चर्चा मिलती है।
- \* पाट की मूलभूत इकाई कृष्णल थी।
- \* रातिका और गुंजा भी लोहे की एक इकाई थी।
- \* मिट्टी के एक विशेष प्रकार के बर्तन बनाये जाते थे। चित्रित, दूसर, मृदभाण्ड (P.G.W) कहा जाता है।

राजनीतिक व्यवस्था ⇒ \* राजा का पद वंशानुगत होने लगा ऋग्वेदिक कालीन कबीलों में जनपद का पद ग्रहण किया।

- \* सभा समिति जैसी संस्थाओं का नियंत्रण कम हुआ और राजा या राजन आधिकारिक शक्ति सम्पन्न होने लगे।
- \* राजा मंत्रीयों तथा आधिकारियों की सहायता से शासन करता था आधिकारी का राजनि कहा जाता था।

धार्मिक जीवन ⇒ \* इस काल में इन्द्र के स्थान पर प्रजापति सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता हो गये थे।

- \* विष्णु की अनुस्यू जाति के दुखों का अन्त करने वाला माना गया।
- \* विभिन्न कर्मकाण्डों तथा अंध विश्वासों का विस्तार हुआ जादू होने तथा भूत पिशाचों के धर्म में स्थान बनाया।
- \* पुष्प सूत्रों के देवता के रूप में प्रचलित थे।
- \* वैदिक संस्कृति में वेदों की संख्या चार हैं

१) ऋग्वेद                      २) सामवेद                      ३) यजुर्वेद                      ४) अथर्ववेद

ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद की रचना कृष्ण द्रैपयन वेद व्यास ने किया

- \* इसमें 1028 सूक्त हैं तथा 1580 मंत्र हैं। (ऋग्वेद) [1500-1000]
- \* मंत्रों के उच्चारण करने वाले को पुरोहित को होत या होता कहा जाता था।
- \* ऋग्वेद में 2 से लेकर 7 मंडल वो पुराने तथा 1 और 10 नये हैं।
- \* इसमें 9 वे मंडल में सोमस तथा 10 वे पुरुषसूक्त का उल्लेख मिलता है।
- \* इसके तीसरे मंडल में विश्वामित्र द्वारा रचित गायत्री मंत्र का उल्लेख है।

सामवेद ⇒ \* इसमें संगीत के सातों स्वरों का वर्णन किया गया है।

\* इसके मंत्रों का उच्चारण करने वाले को 'उद्गाता' कहा जाता है।

- \* सामवेद में कुल 1549 ऋचाएँ हैं।
- \* सामवेद को भारतीय संस्कृति का जनक कहा जाता है।

यजुर्वेद ⇒ \* इसमें यज्ञ, हवन आदि का उल्लेख किया गया है।

- \* इसके मंत्रों का उच्चारण करने वाले को अह्वर्यु कहा गया है।
- \* यजुर्वेद गद्य और पद्य दोनों में लिखा गया है इसलिए यजुर्वेद की मिली जुली शैली को चम्पू शैली कहा जाता है।

अथर्ववेद ⇒ \* अथर्ववेद की रचना अथर्व ऋषि तथा अथर्व ऋषि ने की थी इसलिए इसे अथर्वगिड सवेद भी कहा जाता है।  
 अथर्ववेद में तन्त्र मंत्र जादू लौना और वशीकरण आते हैं।

वेदांग ⇒ वेदांग की संख्या छः बतायी जाती है।

वेदांग	उन्से साम्बान्धीत विषय
शिक्षा	शुद्ध उच्चारण का उल्लेख
कल्प	यज्ञों का सम्पादन
व्याकरण	व्याकरण के नियम
निरुक्त	शब्दों की व्युत्पत्ति
छन्द	छन्दों का प्रयोग
ज्योतिष	खगोल विज्ञान

नोट:- कल्पसूत्र चार प्रकार के होते हैं।

- १) श्रौत सूत्र      २) गृह सूत्र      ३) धर्मसूत्र      ४) शुक्लसूत्र (ज्यामिनीय गार्गीत)

- \* व्याकरण की सबसे पहली तथा व्यापक रचना 'पाणिनी अष्टाध्यायी' है।
- \* छन्दशास्त्र पर पिंगल मुनि का ग्रन्थ छन्द सूत्र उपलब्ध है।
- \* ज्योतिष के सबसे प्राचीन आचार्य गणधमुनि हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थ ⇒ \* ब्रम्ह का अर्थ यज्ञ है। अतः यज्ञीय विषयों के प्रतिपादक ग्रन्थ ब्राह्मण कहे गये।

- \* ब्राह्मण वेद आधिकारता गद्य में लिखे गये हैं।
- \* प्रत्येक वेद के लिए आर्या से ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गये।

आरण्यक ग्रन्थ ⇒ \* वे ग्रन्थ जो ऋषियों द्वारा रचित ग्रन्थों को अंगल में लिखा \* इनमें ज्ञान और चिन्तन को प्रधानता दी गयी है।

उपनिषद् ⇒ \* उपनिषद् को वेदान्त भी कहा गया है।

- \* उपनिषद् की संख्या 108 है।
- \* भारत का आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' है। मुड़को उपनिषद् से लिया गया है।
- \* नाचिकेता तथा यम का सम्पाद 'कठोपनिषद्' है।

### स्मृति साहित्य

स्मृति साहित्य के अन्तर्गत स्मृति पुराण तथा धर्मशास्त्र आते हैं।

- \* मनु स्मृति सबसे प्राचीन स्मृति, ग्रन्थ है। दूसरी शताब्दी ई.पू. युग काल में हुई थी।



- \* पुराणों की संख्या 18 है। इनमें मुख्य - वायु, मतस्य, ब्राह्मण, गरुड आदि हैं।
- \* विष्णु पुराण का सम्बन्ध **त्रीय वंश** से है।
- \* मतस्य पुराण का सम्बन्ध **सातवाहन** से है।
- \* वायु पुराण का सम्बन्ध **गुप्त वंश** से है।
- \* सबसे पुराना पुराण **मतस्य पुराण** है।
- \* इनके संकलन कर्ता महाकवि **लोमहर्ष** हैं इनके पुत्र **उग्रश्रवा** माने जाते हैं।
- \* रामायण और धर्मशास्त्र एक ही श्रेणी में आते हैं।
- \* रामायण की रचना महर्षि **वाल्मीकि** ने की थी।
- \* महाभारत की रचना **वेदव्यास** ने की थी इसे 'अथ साहित्य' कहा जाता है।
- \* भारतीय दर्शन प्रवर्तक \* 16 जनपदों की राजधानी

संख्य	कपिल	जनपद	राजधानी
न्याय दर्शन	गौतम	अंग	चम्पा
योग	पतंजलि	मगध	गिरीब्रज या राजगृह
वैशेषिक	फणाद	काशी	वाराणसी
पूर्व मीमांसा	जैमिनी	कोशल	श्रावस्ती
उत्तर मीमांसा	बादरायण	बज्जी	वैशाली
		मल्ल	कुशीनारा
		चैदि	सुक्तिमती
		पत्स्य	कोशाम्बी
		कुरु	इन्द्रप्रस्थ
		पांचाल	काम्पल्य
		सूरसेन	मथुरा
		गांधार	तक्षशिला
		कम्बोज	रुणपुरा
		अश्मक	पोतने या पौलिस
		अवन्ति	उज्जयिनी
		मतस्य	विराट नगर

- \* इन महाजनपदों का विवरण बौद्ध ग्रन्थ के 'अंगुत्तर' तथा जैन धर्म के 'अगवली' सूत्र में मिलता है।
- \* बौद्ध के जन्म के पूर्व 6 शताब्दी ई. पू. में 16 महाजनपदों में बर्त हुआ है।



## जैन धर्म

\* ऋषभ देव (आदिनाथ) पहले तीर्थंकर थे जिन्हें जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है। जैन धर्म के 24वें तथा आन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे।

\* महावीर स्वामी का जन्म 540 ई.पू. वैशाली के कुण्डग्राम बिहार में हुआ।

\* इनके पिता का नाम 'सिद्धार्थ' तथा माता का नाम 'हेसला' था जो लक्ष्मी के शासक चेटक की बहिन थी।

\* महावीर की पत्नी का नाम यशोदा था।

\* यशोदा से जन्म लेने वाली पुत्री प्रियदर्शिनी का विवाह जमाली से हुआ जो महावीर का प्रथम शिष्य था।

\* इन्होंने 30 वर्ष की आयु में धार त्याग दिया तथा 12 वर्ष के बाद ऋषु-पालिका नदी के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई जिसके बाद इन्हें महावीर, जीन, कैवल्य कहा गया।

\* जैन धर्म में पूर्ण ज्ञान को कैवल्य ज्ञान कहा गया है। इन्होंने अपना प्रथम उपदेश राजगृह में पाली भाषा में दिया।

\* इनकी मृत्यु 42 वर्ष की आयु में पावागिरी में 468 ई.पू. में हुई।

प्रमुख तीर्थंकर नम्बर

ऋषभ देव	1
आजितनाथ	2
सुम्भपनाथ	3
नेमिनाथ	21
अरिष्टनेमि	22
पार्ष्वनाथ	23
महावीर स्वामी	24

जैन धर्म के सिद्धान्त, संघ तथा धर्मग्रन्थ

\* पार्ष्वनाथ के चार व्रत ⇒ 1 ⇒ अहिंसा (हिंसा ना करना)

2 ⇒ अमृषा (झूठ ना बोलना)

3 ⇒ असूय (चोरी ना करना)

4 ⇒ अपरिमृह (सम्पत्ति अजित ना करना)

Note ⇒ महावीर ने पंचवा व्रत ब्रह्मचार्य जोड़ा है।

\* जैन साहित्य को अंग कहते हैं

\* जैन मठों को 'खसदि' कहा जाता है।

\* जैन ग्रन्थों को पूर्व या आगम कहा जाता है। जिनकी रचना प्राकृत भाषा में हुई।

\* त्रिस्तम्भ जैन दर्शन के अनुसार मोक्ष के लिये तीन तत्वों का होना जरूरी है।

1) सम्यक् दर्शन      2) सम्यक् ज्ञान      3) सम्यक् कर्म

\* जैनीयों द्वारा शरीर को धूरवा रखकर प्राण त्यागने को साल्लेखना विधि कहा जाता है।

\* जैन संघ को दो भागों में बाँटा ⇒ श्वेताम्बर (भद्रबाहु के समर्थक)

दिगम्बर (स्थूलभद्र बाहु के समर्थक)

\* जैन संगतियाँ ⇒

पहली  
द्वितीय